काव्य दीप्ति

कबीर दास

1. जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।

   मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

   इस दोहे के द्वारा कबीर दास साधु की जाति की महत्वहीनता एवं ज्ञान का महत्व समझा रहे हैं। कबीर का कहना है कि किसी साधु से मिलने पर उनकी जाति का पता लगाने की ज़रूरत नहीं है। हमें इस बात का पता लगाना है कि साधु को कितना ज्ञान है। जब कोई तलवार खरीदता है तो उसका गुण देखा जाता है न कि उसके म्यान का गुण या सौन्दर्य। म्यान तो तलवार को सँभालकर रखने की चीज़ मात्र है, इससे अधिक उसका कोई महत्व नहीं है। महत्व तो तलवार का है। उसी तरह जाति का कोई महत्व नहीं है, महत्व तो ज्ञान का है।

2. पानी केरा बुदबुदा अस मानुस की जात।

   देखत ही छिप जायेगी, ज्यों तारे परभात।।

   इस दोहे के द्वारा कबीरदास जीवन की क्षणिकता के बारे में कहते हैं। पानी का बुदबुदा क्षणिक होता है, उसी तरह मानव जीवन भी क्षणिक है। प्रभात के तारे देखते ही देखते गुम हो जाते हैं, मनुष्य जीवन भी ऐसे ही है। पता नहीं जीवन का अंत कब होगा, कभी भी उसका अंत हो सकता है। ऐसे जीवन में हमें अच्छे कर्म करते रहना चाहिए।

3. मालिन आवत देखिकर, कलियाँ करि पुकार।

   फूले-फूले चुन लिए, कालि हमारी बार।।

   मालिन को आते हुए देखकर कलियाँ ऐसा पुकारने लगे कि सारे फूलों के तोड़ लिया और कल हमारी बारी है। मतलब फूलों को तोड़ लिया जाता है और अगले दिन कलियाँ जब खिल जाती हैं तो उनको तोड़ लिया जायेगा। मानव जीवन भी इसी तरह है, आज जो जवान है वह कल बूढ़ा हो जायेगा और फिर मरकर मिट्टी में मिल जायेगा। इस दोहे के द्वारा कबीरदास जीवन की नश्वरता के बारे में कहते हैं।

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

4. ऊँचे कुल का जनमिया, करनी ऊँच न होई।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधु निन्दै सोई।।

कबीरदास का कहना है कि ऊँचे कुल में जन्म ले लिया और कर्म ऊँचे नहीं हैं तो इसमें कोई महत्व नहीं है। यदि सोने के लोटे में मदिरा भरकर दिया जाये तो साधु उसे स्वीकार नहीं करते और उसकी निन्दा करते हैं। उसी तरह ऊँचे कुल में जन्म लेकर बुरे कर्म करनेवाले भी निन्दा के लायक होते हैं। कुल से नहीं कर्म से मनुष्य ऊँचा होता है, यही बात कबीरदास समझा रहे हैं।

5. भली भई जो गुरु मिले, नहिंतर होती हानि।
दीपक जोति पतंग ज्यों, पड़ता पूरी जानि।।

कबीरदास हमेशा गुरु को महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। उनका कहना है कि अच्छा हुआ जो मुझे गुरु मिल गये, नहीं तो मेरी हानि होती। जिस तरह दीपक की आग पर आकृष्ट होकर पतंगे उस पर पड़ जाते हैं वैसे ही मैं भी विषय वासनाओं और माया की ओर आकृष्ट होकर अपने जीवन को नष्ट कर देता। गुरु को प्राप्त होकर मैं इन सबसे बच गया। गुरु की महिमा तथा आवश्यकता का वर्णन इस दोहे के द्वारा कबीरदास करते हैं।

6. दुर्लभ मानुस जन्म है, देह न बारंबार।
पाका फल जो गिरि परा, बहुरि न लागै डार।।

कबीरदास का कहना है कि मनुष्य का जन्म बहुत मुश्किल से मिलता है और मानव का यह जो शरीर है वह बार-बार नहीं मिलता। पका हुआ फल पेड़ से अलग होकर गिर जाता है तो वह फिर से पेड़ पर लगता नहीं। उसी तरह मानव जीवन एक बार नष्ट हो जाने पर फिर से मिलेगा नहीं। इसलिए सत्कर्म से इस जन्म को सार्थक बनाने का उपदेश कबीरदास देते हैं।

सूरदास

1.चरण-कमल बंदौ हरि राई।
.....बार-बार बन्दौ तेहि पाई।।

इस पद के द्वारा सूरदास श्रीकृष्ण की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि श्रीकृष्ण की कृपा है तो कुछ भी असंभव नहीं है। सूरदास कहते हैं कि श्रीकृष्ण की कृपा से लंगड़े पर्वत को लांघ सकते हैं, अंधे को सब कुछ

VNMSS COLLEGE LIBRARY

दिखाई देता है, बहरा फिर से सुन सकता है और गूँगा फिर से बोल सकता है। श्रीकृष्ण की कृपा है तो भिखारी राजा बनकर अपने सिर पर मुकुट धारण कर सकता है अर्थात गरीब भी अमीर बन जाता है। सूरदास कहते हैं ऐसे करुणामय श्रीकृष्ण के कमल जैसे चरणों की बार-बार वंदना करता हूँ।

2. मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै?

.....छेरी कौन दुहावै?

इस पद के द्वारा सूरदास भगवान श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति के महत्व का वर्णन करते हैं। सूरदास का कहना है कि मेरा मन भगवान श्रीकृष्ण को छोड़कर और कहीं से भी सुख नहीं पाता। जिस तरह सागर में पड़े जहाज़ पर बैठा पंछी और किसी आश्रय की खोज में उड़ जाता है और कहीं भी आश्रय न मिलने पर लौटकर जहाज़ पर ही आ बैठता है उसी तरह मेरा मन भी जहाँ कहीं भी जाये, आश्रय न पाकर श्रीकृष्ण पर ही लौट आता है। कमल नयन श्रीकृष्ण को छोड़कर कोई अन्य देवताओं की उपासना ऐसा मूर्ख ही करेगा जो पास बहती पवित्र गंगा को छोड़कर कुआ खोद कर अपना प्यास बुझाए। जो भंवरा कमल का रस चख चुका है वह फिर करील जैसे कड़वे फल को क्यों चखेगा। सूरदास का कहना है कि कामधेनु को छोड़कर कोई मूर्ख ही बकरी को दुहेगा। मतलब श्रीकृष्ण का महत्व सबसे बढ़कर है, ऐसे कृष्ण को छोड़कर अन्य किसी देवता का भजन करना मूर्खता है। यही बात इस पद के द्वारा सूरदास कहते हैं।

3. मैया, मैया हौं न चरैहौं गाई।

.....मरत ताजि रिंगाई।।

बाल कृष्ण अपनी माता यशोदा से ग्वाल-बालकों की शिकायत करते हुए कहते हैं कि माँ अब मैं गाय चराने नहीं जाऊँगा। वहाँ पर सभी ग्वाल मुझसे ही अपने गायों को घिरवाते हैं, इसलिए दौड़ते-दौड़ते मेरे पाँव में दर्द होने लगा है। माँ, मैं जो कहता हूँ उस पर तुम्हें विश्वास नहीं है तो बलराम भैया से पूछ लो। अपने बेटे की इन बातों को सुनकर माता य़शोदा को गुस्सा आ जाता है और वह ग्वाल-बालकों को गाली देने लगती है और वह कहती है कि मैं अपने लड़के को वन में केवल मन बहलाने केलिए भेजती हूँ। सूरदास का

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

कहना है कि यशोदा माता कह रही है कि वन में सारे ग्वाल-बालक मिलकर उसके बेटे को परेशान कर रहे हैं।

तुलसीदास

1. तुलसी भरोसे राम के, निर्भय हो के सोए।
   अनहोनी होनी नहीं, होनी हो सो होए।।

   रामभक्त कवि तुलसीदास कहते हैं कि भगवान राम पर भरोसा करके आराम से निर्भय होकर सो जाए। कुछ भी अनिष्ट नहीं होगा और यदि कुछ अनिष्ट घटना होनी है तो वह होकर ही रहेगी। इसलिए अनावश्यक बातों की चिंता किए बिना भगवान राम पर भरोसा करके आराम से रहने का सलाह तुलसीदास देते हैं।
2. जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।
   सन्त हंस गुन गहहिं पय, परिहरि वारि विकार।।

   तुलसीदास का कहना है कि ईश्वर ने इस जड़-चेतन विश्व को गुणों और दोषों से युक्त बनाया है। जिस तरह हंस जल मिलाये दूध से केवल दूध को पी लेता है उसी प्रकार संत रूपी हंस दोष रूपी जल को छोड़कर गुण रूपी दूध को ही स्वीकार करते हैं।
3. बिना तेज के पुरुष की अवशि अवज्ञा होय।
   आगि बुझै ज्यों राख को आप छुवै सब कोय़।।

   तुलसीदास का कहना है कि संसार में तेजहीन मनुष्य की अवज्ञा या अपमान होता है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को अपना तेज या अभिमान बनाए रखना चाहिए। अपनी इस बात को अच्छी तरह समझाने केलिए वे कहते हैं कि आग के बुझ जाने पर हम उसे छू सकते हैं और रौंद भी सकते हैं। लेकिन जलती हुई आग का स्पर्श करना असंभव होता है। उसी तरह तेजहीन मनुष्य का अपमान करना आसान होता है पर तेजयुक्त मनुष्य का अपमान कोई भी कर नहीं सकता।

VTMNSS COLLEGE LIBRARY

4. तुलसी इस संसार में भाँति भाँति के लोग।
सबसे हँस मिल बोलिए, नदी नाव संजोग।।

तुलसीदास का कहना है कि इस संसार में कई प्रकार के लोग हैं। हमें उन सबसे हँसकर मिलना और बोलना चाहिए। जिस तरह नाव नदी के संयोग से, मतलब नदी से मिलकर उसमें चलते हुए, पार लगती है उसी प्रकार हमें भी इस भव सागर को पार करना है।

5. दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए, जब लग घट में प्राण।।

तुलसीदास का कहना है कि दया भावना से ही धर्म उत्पन्न होता है और अभिमान से तो केवल पाप ही उत्पन्न होता है। जब तक हमारे शरीर में प्राण है तब तक दया भावना को छोड़ना नहीं है।

6. लसी पावस के समय, धरी कोकिलन मौन।
अब तो दादुर बोलिह, हमें पूछिह कौन।।

तुलसीदास कहते हैं कि बरसात के मौसम में मेंढकों की बढ़ती आवाज़ के कारण कोयल मौन धारण करती है, उसकी मीठी आवाज़ सुनाई नहीं देती। ऐसे ही धूर्त या कपट लोग बोलने लगते हैं तो समझदार व्यक्ति चुप रह जाते हैं, वे व्यर्थ के वार्तालाप में अपनी ऊर्जा नष्ट नहीं करते। मतलब ढोंगी लोगों के बक-बक होने पर सच्चे साधु-संत मौन रह जाते हैं।

रहीम

1. जो घर ही में घुसि रहे कदली सुपत सडौल।
तो रही तिनते भले पथ के अपत करील।।

रहीम का कहना है कि केले का पौधा जो है वह घर और आंगन की शोभा बढ़ाता है। लेकिन काँटेदार, असुन्दर करील रास्ते पर होने के कारण पथिकों तथा पंछियों को आश्रय देता है। इसलिए वही बेहतर है। मतलब जो दूसरों का काम आता है वह असुन्दर होने पर भी बेहतर होता है।

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

2. काज परै कछु और है काज सरै कछु और।
रहिमन भँवरी के भए, नदी सिरावत मौर।।

रहीम का कहना है कि यदि हमसे कोई काम है तो लोग अच्छा व्यवहार करता है और काम निकलते ही उनका व्यवहार बदल जाता है। इस बात को समझाने केलिए वे यह उदाहरण देते हैं कि शादी के अवसर पर मौर या मुकुट सिर पर धारण किया जाता है जिसके बिना शादी का होना असंभव है। लेकिन शादी का रस्म समाप्त हो जाने पर उस मुकमट को नदी में छोड़ दिया जाता है।

3. जो रहीम ओछो बड़ै, तो अति ही इतराय।
प्यादे सों फरजी भयो, टेढ़ो टेढ़ो जाय।।

रहीम का कहना है कि ओछे लोग(छोटे लोग) जब प्रगति करते हैं तो वे बहुत इतराते हैं या घमण्ड करते हैं। शतरंज के खेल में प्यादे (सिपाही) का अधिक महत्व नहीं है, लेकिन वही प्यादा जब फरजी या मंत्री बन जाता है तो वह टेढ़ी चाल चलने लगता है। ऐसे ही है तुच्छ लोगों का आचरण यही रहीम का कहना है।

4. रहिमन वे नर मर चुके जो कहुँ माँगन जाहिं।
उनते पहले वे मुए, जिन मुख विकसत नाहिं।।

रहीम का कहना है कि भीख माँगने से अच्छा है मरना। अपने इस बात को समझाते हुए वे कहते हैं कि जो मनुष्य भीख माँगने जाता है वह मरे हुए के समान है। जो व्यक्ति भीख माँगनेवाले को कुछ देने से इनकार करता है, वह माँगनेवाले से पहले ही मरे हुए के समान है।

5. पावस देखि रहीम मन, कोइल साधे मौन।
अब दादुर बकता भए, हमाके पूछे कौन।।

रहीम का कहना है कि वर्षा ऋतु को देखकर कोयल तथा रहीम का मन मौन हो गया है। अब तो मेंढ़क ही बोलते रहेंगे और हमारी बात कोई पूछेगा ही नहीं। मतलब कुछ अवसर ऐसे आते हैं जब गुणवान को चुप रह जाना पड़ता है और गुणहीन बोलते ही रहेंगे। ऐसे में गुणवान का आदर कोई नहीं करता।

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

6. कौन बड़ाई जलधि मिलि, गंग नाम भो धीम।
केहि की प्रभुना नहीं घटि, पर घट गये रहीम।।

रहीम का कहना है कि गंगा नदी की बहुत बड़ी महिमा है, लेकिन समुद्र से मिल जाने पर उसकी महिमा घट जाती है और उसका नाम भी नहीं रह जाता। उसी तरह किसी दूसरे के घर में अतिथि बनकर अधिक दिन रहने से किसी का भी आदर- सम्मान नष्ट हो जाता है और उन्हें अपमान सहना पड़ता है।

नौका विहार

सुमित्रानन्दन पन्त

छायावाद के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म अल्मोड़ा के कौसानी नामक गाँव में 20 मई, 1900 को हुआ था। उनके बचपन का नाम गोसाईदत्त पन्त था। हाईस्कूल में भर्ती होने पर उन्होंने अपना नाम बदलकर सुमित्रानन्दन पन्त रखा। काव्य-जीवन के प्रारंभ में वे छायावाद से जुड़े, बाद में मार्क्सवाद एवं गाँधीवाद से प्रभावित हुए। पन्त जी का परिचय अरविन्द घोष से हुआ तो वे उनके दर्शनों से प्रभावित होगए और अनेक काव्यों की रचना की। कुछ समय तक वे 'रुपाभ' पत्रिका का संपादन किया था। 1950 ई. में पन्त जी आकाशवाणी में हिन्दी चीफ प्रोड्यूसर और फिर साहित्य सलाहकार के पद पर नियुक्त हुए। लोकायतन नामक महाकाव्य पर उन्हें सोवियत भूमि पुरस्कार, 'चिदम्बरा' पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार, 'कला एवं बूढ़ा चाँद' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था तथा 1961 ई. में ये पद्मभूषण की उपाधि प्राप्त हुए। 28 दिसम्बर, 1977 को पन्त जी प्रकृति की मृत्यु हो गई।

कवि पन्त जी चाँदनी रात में किए गए नौका-विहार का चित्रण करते है। इसमें कवि ने गंगा की कल्पना नायिका के रूप में की है। कवि का कहना है कि चारों ओर शान्त, तरल एवं उज्ज्वल चाँदनी फैली हुई है। आकाश पृथ्वी को स्थिर दृष्टि से देख रहा है। पृथ्वी अत्यधिक शान्त एवं शब्द रहित है। ऐसे सिन्दर, शान्त वातावरण में क्षीण धार वाली गंगा बालू के बीच धीरे-धीरे बहती है। उसे देखकर ऐसी प्रतीत होती है मानो कोई दुबले-पतले चुस्त शरीर वाली सुन्दर युवती दूध जैसी सफेद बिस्तर पर गर्मी से व्याकुल होकर थकी हुई

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

शान्त लेटी हुई हो। गंगा के जल में चन्द्रमा का रूप झलक रहा है, जिसे देखर ऐसा लगता है जैसे गंगारूपी कोई तपस्विनी अपने चन्द्र-मुख को अपने ही कोमल हाथों पर रखकर लेटी हुई हो और छोटी-छोटी लहरें उसकी छाती पर ऐसी प्रतीत होती है मानों उसके लहराते हुए कोमल केश हैं। तारों भरे आकाश की चंचल परछाईं गंगा के जल में पड़ती है, तो ऐसा लगता है मानो गंगा रूपी तपस्विनी बाला के गोरे-गोरे अंगों के स्पर्श से बार-बार कॉपता, तारों जड़ा उसका नीला आँचल लहरा रहा हो। आकाशरूपी नीले आँचल पर चन्द्रमा की कोमल चाँदनी में प्रकाशित छोटी-छोटी कोमल, टेढ़ी, लहरें ऐसी प्रतीत होती हैं मानो लेटने के कारण उसकी रेशमी साड़ी में सिकुडनें पड़ गई हों। इन पंक्तियों में गंगा की विशेषताओं को तपस्विनी बाला के रूप में प्रकट किया गया है।

पन्त जी कहते हैं कि वे चाँदनी रात के प्रथम पहर में नौका-विहार करने के लिए एक छोटी-सी नाव लेकर तेज़ी से गंगा में आगे बढ़ जाते हैं। गंगा के तट की सुन्दरता का वर्णन करते हुए वे कहते हैं कि गंगा का तट ऐसा सुन्दर लग रहा है मानो खुली पड़ी रेतीली सीपी पर चन्द्रमा रूपी मोती की चमक यानी चाँदनी विचर रही हो। ऐसे सुन्दर वातावरण में लंगर उठते ही छोटी-छोटी नावें गंगा मे धीरे-धीरे अपने पालों रूपी पंख खोलकर सुन्दर हंसिनी की तरह तैरने लगीं। गंगा का जल शान्त एवं निश्चल है, जो दर्पण के समान शोभायमान है। जलरूपी उस स्वच्छ दर्पण में चाँदनी में नहाया रेतीला तट प्रतिबिम्बित होकर पल भर केलिए दुगुने परिमाण में प्रकट हो रहा है। गंगा तट पर शोभित कालाकाँकर के राजभवन का प्रतिबिम्ब गंगा जल में झलक रहा है। ऐसा लग रहा है मानो यह राजभवन गंगा जलरूपी शय्या पर निश्चिन्त होकर सो रहा है और उसकी झुकी पलकों एवं शान्त मन में वैभवरूपी स्वप्न तैर रहे हैं।

गंगा में नौका-विहार करते हुए पन्त जी कहते हैं कि नौका चलने के कारण जल में तरंगें उठती हैं, जिससे जल में प्रतिबिम्बित आकाश इस छोर से उस छोर तक हिलता हुआ-सा प्रतीत होता है। जल में पड़ती तारों की परछाई को देखकर ऐसा लगता है, मानो तारों का दल जल के अन्दर प्रकाश फैलाकर अपनी आँखें फाड़-फाड़ कर कुछ खोज रहा हो। गंगा में रह-रहकर उठने वाली चंचल लहरें भी अपने आँचल की आड़ में तारे रूपी छोटे-छोटे जगमगाते दीपों को छिपाकर प्रतिक्षण लुकती-छिपती हुई-सी प्रतीत होती हैं। वहीं पास में शुक्र तारे की झिलमिलाती छवि जल में किसी सुन्दर परी की

VTMNSS COLLEGE LIBRARY

तरह तैरती हुई दिखाई देती है। श्वेत चमकती हुई जल-तरंगों में उस परछाई के ओझल होने का दृश्य इतना सुन्दर है कि कवि को ऐसा लगता है मानो चाँदी से चमकते सुन्दर केशों में परी छिप गयी हो। जल में प्रतिबिम्बित दशमी के चाँद का तिरछा मुख कभी लहरों की चंचलता में छिप जाता है, तो कभी दिखाई देता है। उसे देख कवि को ऐसा लगता है मानो अपने ही रूप-सौन्दर्य से मुग्ध होकर नायिका अपने मुख को कभी घूँघट में छिपा लेती और कभी उससे बाहर करती। कवि ने यहाँ गंगा जल में पड़ने वाली परछाईं के माध्यम से आकाश, तारों एवं चन्द्रमा के सौन्दर्य पक्ष को उभारने का प्रयास किया है।

कवि की नाव जब गंगा के मध्य धार में पहुँचती है, तो वहाँ से चाँदनी में चमकते हुए रेतीले तट स्पष्ट दिखाई नहीं देते। गंगा के मध्य धार से दिखाई देनेवाले दोनों किनारों को देखकर कवि को ऐसा लगता है जैसे वे व्याकल होकर गंगा की धारा रूपी नायिका के पतले कोमल शरीर का आलिंगन करना चाहते हों जिसके लिए उन्होंने अपनी दोनों बाँहें फैला रखी हैं। दूर क्षितिज पर दिखाई देनेवाले वृक्षों की पंक्ति को देख कर ऐसा लगता है, मानो वे नीले आकाश के विशाल नेत्रों की तिरछी भौंहें हैं जो धरती को एकटक देख रहे हैं। कवि आगे कहते हैं कि वहाँ पास ही एक द्वीप है, जो लहरों के प्रवाह को विपरीत दिशा में मोड़ रहा है। गंगा की धारा के मध्य स्थित उस द्वीप को देखकर कवि को ऐसा लगता है, जैसे कोई छोटा-सा बालक अपनी माता की छाती से लगकर सो रहा हो। वहीं गंगा नदी के ऊपर एक पक्षी को उड़ते देख कवि सोचने लगता है कि कहीं यह चकवा तो नहीं है, जो भ्रमवश जल में अपनी ही छाया को चकवी समझ उसे पाने की चाह लिए, विरह-वेदना को मिटाने केलिए व्याकुल होकर आकाश में उड़ता जा रहा है।

कवि नौका-विहार के दौरान गंगाजल में प्रतिबिम्बित होनेवाले चन्द्रमा और तारों के नृत्य का वर्णन करते हैं। अथाह जल में नाव बीच धारा में पहुँचती है तो नाव के भार में स्वाभाविक रूप से कमी आ जाती है। कवि कहते हैं कि जब मेरी नाव गहरे पानी में धारा के मध्य जा पहूँची और उसका भार कम हो गया तब मैंने पतवारों को घुमाकर नाव को धारा की विपरीत दिशा में कर दिया। पतवारों के चलने से जल में अधिक मात्रा में झाग उत्पन्न हो गया जिसे देखकर कवि को ऐसा लगता है जैसे पतवार अपनी हथेलियों को फैलाकर उनमें झाग रूपी मोतियों को भर-भर कर तथा तारे रूपी माला तोड़-तोड़कर जल में बिखेर रहा है। पतवारों के चलने के कारण नदी के शान्त जल में उठने वाली

VTMNSS COLLEGE LIBRARY

लहरें चाँदी के साँप जैसी चमकती हुई, आगे की ओर रेंगती हुई प्रतीत हो रही है। चन्द्रमा की किरणें लहरों पर पड़कर इस प्रकार नृत्य करती हुई-सी दिख रही है, जैसे बहते हुए जल में असंख्य सीधी रेखाएँ खिंची हुई हों। एक साथ उठती बहुत-सी लहरों में एक ही चन्द्रमा सौ-सौ चन्द्रमा और एक-एक तारा सौ-सौ तारे बनकर झिलमिला रहे हैं। उन्हें देखकर कवि को ऐसा लगता है मानो गंगा रूपी खेत में लहरें रूपी लताएँ फल-फूल रही हैं। किनारे की ओर लौटते हुए कवि कहते हैं कि अब नदी की गहराई कम होने लगी है और हम लग्गी से पानी की गहराई का अनुमान लगाते हुए अत्यन्त उत्साहित होकर घाट की ओर बढ़ रहे हैं।

कवि कहते हैं कि जैसे-जैसे हमारी नौका दूसरे किनारे की ओर बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे हमारे हृदय में सैकड़ों विचार उठते हैं। ऐसा लगता है मानो इस संसार का क्रम भी इस जलधारा के समान ही है। नदी की धारा निरन्तर बहती चली आ रही है, आगे बह चुके जल का स्थान पीछे का जल ले लेता है, उसी प्रकार जीवन का बहाव भी निरन्तर है। जलधारा के समान ही जीवन का विस्तार शाश्वत है। जीवन का क्रम भी धारा की तरह कभी न टूटने वाला है। कवि पन्त कहते हैं कि आकाश का यह विस्तार शाश्वत है। चन्द्रमा की चाँदी जैसी हँसी अर्थात् चाँदनी भी चिरस्थायी है। लहरों का ऐश्वर्य भी निरन्तर बना रहता है। कवि कहता है कि संसार की जीवन रूपी नौका को चलाने वाले ईश्वर जीवन की गति में जन्म एवं मृत्यु का शाश्वत कर्म बनाए रखते हैं। जीवनरूपी नौका का विहार निरन्तर होता रहता है। कवि का कहना है कि चिन्तनशील होकर वे अपने अस्तित्व तथा सत्ता का ज्ञान भूल गया। जीवन की नित्यता का जलधारा रूपी यह शाश्वत प्रमाण उन्हें अमरत्व प्रदान करता है। इस प्रकार नौका विहार का सौन्दर्य चित्रण करते हुए कवि जीवन की नित्यता पर विचार करते हैं।

टूटा पहिया

धर्मवीर भारती

डॉ.धर्मवीर भारती दूसरे सप्तक के सुप्रसिद्ध कवि एवं लेखक हैं। उन का जन्म 25 दिसंबर 1926 को इलाहाबाद में हुआ। वे हिंदी की प्रयोगवादी काव्य धारा के नए कवियों में अग्रणी थे। कविता, कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना,

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

उपन्यास, रिपोर्ताज, अनुवाद आदि विविध विधाओं को उन्होंने अपनी लेखनी से समृद्ध किया। सन् 1960 में ये हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्रिका धर्मयुग के संपादक बने। उनको पद्मश्री, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, भारत भारती, व्यास सम्मान आदि पुरस्कार मिले हैं। 4 सितंबर 1997 को उनका निधन हुआ। 'टूटा पहिया' भारती जी की एक छोटी कविता है। यह रचना भारती जी के 'सात गीत वर्ष' से चुनी गई है। टूटा पहिया लघु और उपेक्षित मानव का प्रतीक है जिसे बेकार समझकर फेंक दिया गया है। नया कवि उसकी संभावनाओं को पहचानता है और उसकी क्षमताओं का मूल्यांकन करता है।

टूटा पहिया कहता है कि मैं टूटा हुआ हूँ। लेकिन मुझे मत फेंको। कौन जाने कि इस दुरूह चक्रव्यूह में अभिमन्यु जैसे कोई साहसी वीर घिर जाए और बड़े-बड़े महारथी उस साहसी वीर की निहत्थी आवाज़ को कुचल देना चाहे तब मैं उसका आश्रय बन सकता हूँ। कवि का कहना है कि पहिया यदि टूट जाये तो भी उसे फेंकना नहीं चाहिए। यह संसार जो है एक दुरूह चक्रव्यूह है। इस चक्रव्यूह में बड़े-बड़े महारथी असत्यों और अन्यायों की अक्षौहिणी सेनाओं को खड़ा करेंगे तो उन सेनाओं को चुनौती देते हुए न जाने कब कोई दुस्साहसी अभिमन्यु आकर घिर जाए। ऐसे में उन महारथियों के ब्रह्मास्त्रों से कुचला जाने से अपने आप को बचाने केलिए टूटा हुआ पहिया ही उसका काम आयेगा।

कवि का कहना है कि इतिहास की गति सहसा झूठी पड़ जाती है तो सच्चाई को टूटे पहिए का सहारा लेना पड़ेगा। इसलिए टूटे पहिए की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। जब सारा संसार किसी साहसी मनुष्य की आवाज़ को दबाने का प्रयास करेगा, तब रथ का टूटा पहिया उसके हाथों में रहकर शत्रुओं के ब्रह्मास्त्रों का सामना करेगा और इस तरह वह अकेले का आश्रय बनेगा।

टूटा पहिया उपेक्षित मानव का प्रतीक है। आजकल समाज में असत्य और अन्याय का बोलबाला है। इन असत्यों और अन्यायों के खिलाफ अगर कोई लड़ेगा तो कोई लघु मानव ही उसका सहारा बनेगा। जब सारा संसार उस साहसी मनुष्य की अकेली आवाज़ को दबाना चाहेगा, तब उपेक्षित मानव या लघु मानव ही टूटे पहिए की तरह उसका साथ दे सकता है।

'टूटा पहिया' एक प्रतीकात्मक रचना है। इस प्रतीक को कवि ने महाभारत के कथानक से लिया है। अभिमन्यु ने चक्रव्यूह में अकेले ही प्रवेश

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

किया। कौरव सेना के महारथियों ने उसे घेर कर उसके सब शस्त्रास्त्र नष्ट कर डाले। उसने रथ के टूटे पहिए को अस्त्र बनाकर शत्रुओं का सामना किया। अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी बड़े-बड़े महारथी- कर्ण, द्रोण, भीष्म आदि अपने महाशक्ति से निशस्त्र अभिमन्यु का सर्वनाश करते हैं । आज के समाज में भी इन जैसे लोगों का काम चलते हैं।

हमारे समाज अधर्म की ओर जाए तो सत्य का पक्ष टूटे हुए पहिए का सहारा लेता है। टूटा पहिया उपेक्षित मानव का प्रतीक हैं जो सार्थक है। तुच्छ सी लगनेवाली वस्तु भी आश्रय देने में समर्थ हो सकती हैं। कवि ने महाभारत के अभिमन्यु की कहानी को प्रतीकात्मक बनाकर वर्तमान युग की जटिलता का चित्रण किया है। समाज जब न्याय और सत्य के रास्ते से हटकर असत्य के मार्ग पर बढ़ना चाहेगा, तब उसका विरोध करनेवाला व्यक्ति अभिमन्यु के समान अपने को चक्रव्यूह में घिरा पाएगा। उस समय उसके लिए लघु और निस्सार समझे जानेवाला कोई आदमी सहायक बनेगा। इसलिए टूटा पहिया जैसा लघु मानव की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, यही इस कविता का संदेश है।

बडे-बडे व्यक्ति, महान योद्धा जानते हैं कि वह जिस ओर से लड़ रहे हैं, वह अन्यायी हैं। वे अन्यायी शासक वर्ग अपनी शक्ति और अधिकार रूपी ब्रह्मास्त्र से निरायुध व्यक्ति को घायल कर देना चाहते हैं। ऐसे अवसर पर रथ का टूटा हुआ पहिया मानव-मूल्य बनकर निरायुध के हाथ में आ जाता है और ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता है। यहाँ महारथी शोषक वर्ग का और ब्रह्मास्त्र शासक वर्ग के द्वारा शक्ति और अधिकार के दुरुपयोग का प्रतीक हैं। इस कविता में महाभारत के अभिमन्यु की कहानी को प्रतीकात्मक बनाकर वर्तमान युग की जटिलता का चित्रण किया है।

आजकल समाज में असत्य और अन्याय का बोलबाला है। इन असत्यों और अन्यायों के खिलाफ अगर कोई लड़ेगा तो कोई टूटा पहिया यानी लघु मानव ही उसका सहारा बने, यही कवि की आशा है।

VMMSS COLLEGE LIBRARY

भिक्षुक

सूर्यकान्तत्रिपाठी निराला

बहुमुखी व्यक्तित्व तथा प्रतिभा के धनी सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का जन्म सन् 1898 ई. को बंगाल के महिषादल गाँव में हुआ। वे छायावाद के प्रमुख प्रतिनिधि कवि हैं। भिक्षुक निराला की एक प्रगतिवादी कविता है।

इसमें कवि ने एक भिखारी की दीन दशा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। इसके द्वारा कवि ने भिक्षुक एवं निर्धन वर्ग के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की है।

कवि भिखारी का शब्द-चित्र खींचते हुए कहते हैं कि वह दीनता प्रकट करते हुए पथ पर आता है। गरीबी के कारण उसके पेट और पीठ दोनों मिलकर एक हो गया है। वह लाठी के सहारे चल रहा है। भूख मिटाने को मुट्टी भर अनाज केलिए वह अपनी फटी- पुरानी झोली का मुँह फैलाता है।

कवि आगे कहते हैं कि उस भिखारी के साथ दो बच्चे भी हैं। वे बच्चे अपने दाएँ हाथ दानी लोगों की कृपा दृष्टि केलिए फैलाते हैं और बाएँ हाथ से अपने पेट मलते हैं। उनके ओठ भूख से सूख गये हैं। उनके भाग्य के विधाता दानी लोगों से उन्हें कुछ भी नहीं मिलता। वे केवल आँसुओं के घूँट पीकर रह जाते हैं। भूख असह्य होने पर कभी वे बच्चे सड़क परे खड़े होकर होटलों से फेंकी गयी जूठी पत्तलों को चाटते हैं। ऐसा करते समय उन्हें कुत्तों से भी लड़ना पड़ता है।

भिखारी के बच्चों की यह दीन दशा देखकर कवि कहते हैं कि उनके पास सहानुभूति का अमृत है। कवि उस अमृत से उनके हृदय को सींच लेना तथा उनके दुख को अपने हृदय में खींच लेना चाहते हैं जिससे वे बच्चे अभिमन्यु की तरह वीर और बहादुर हो जायेंगे।

भिखारी के बच्चों को देखकर समाज के पूँजीपति लोग तनिक भी नहीं पिघलते। किन्तु कवि उन बच्चों में वीर अभिमन्यु की कल्पना करते हैं। इस कल्पना की पूर्ति के लिए वे समाज के समस्त विष को पान करने केलिए तैयार हैं। निराला की यह कविता उनकी अनुभूति की सच्चाई को प्रदर्शित करती है।

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

भिक्षुक का शब्द-चित्र खींचते समय पहले वे उसकी भूख के माध्यम से उसे कुत्तों की श्रेणी में पहुँचाते हैं। कविता के अन्त में भिखारियों को इस दशा तक पहुँचाने वाले समाज के प्रति विद्रोह भाव जगाकर संघर्ष करने की प्रेरणा वे देते हैं।

नमक

अनामिका

समकालीन हिन्दी साहित्य की सशक्त रचनाकार अनामिका का जन्म 17 आगस्त 1961 को बिहार के मुज़फ्फरपुर में हुआ। आपकी कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध तथा आलोचना आदि सभी प्रकार की रचनाओं में नारीवादी दृष्टिकोण दिखाई दाता है। अनामिका की एक छोटी सी कविता है 'नमक' जिसके द्वारा स्त्री सौन्दर्य, आँसुओं में अभिव्यक्त उसकी विवशता, गाँधी के सत्याग्रह और सड़क पर अमरूद बेचनेवाली मुनिया आदि को एक ले आती हैं। ये सब समाज को अंग हैं।

कवयित्री का कहना है कि नमक धरती का दुख है, साथ-साथ वह धरती का स्वाद भी है। इस पृथ्वी का तीन चौथाई भाग नमकीन पानी है, मतलब सागर है। सागर का पानी नमकीन होने के कारण पीने योग्य नहीं है। जिस तरह पृथ्वी का अधिकांश हिस्सा सागर होता है जिसमें नमकीन पानी है उसी तरह जीवन में दुख की मात्रा अधिक होती है। कवयित्री कहती है कि आदमी का दिल नमक के पहाड़ की तरह है जो बहुत जल्दी पसीज जाता है। खाना स्वादिष्ट बनाने में नमक का मुख्य स्थान होता है। दाल में नमक अधिक या कम होने पर कभी-कभी गुस्से में आकर थालियाँ फेंक दी जाती हैं। इस तरह नमक घरेलू झगड़े का कारण भी बन जाता है। इस तरह के झगड़े होने पर शर्म से धरती में गड़ जाने का मन होता है।

कवयित्री आगे एक तरफ इशारा करके कहती हैं कि वे जो सरकारी दफ्तर हैं वे राजकीय नमकदान (royal salt container) हैं। वे हर पल हमारे जले पर बड़ी होशियारी से नमक छिड़क देते हैं। सरकारी कार्यालयों में अपनी समस्याओं के समाधान केलिए हम जाते हैं तो कानून और व्यवस्था का सहारा लेकर वहाँ के

VTMNSS COLLEGE LIBRARY

लोग समस्याओं को और भी जटिल बना देते हैं। इस तरह वे हमारी परेशानियों को और भी बढ़ाते हैं और हम असहाय रह जाते हैं।

कवयित्री का कहना है कि जिन औरतों के चेहरे पर सौन्दर्य है उनसे पूछिए कि उन्हें वह सौन्दर्य कितना भारी पड़ता है, मतलब अपने चेहरे के सौन्दर्य को बनाए रखने केलिए उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ती हैं। सागर मुफ्त में नमक देता है, लेकिन उस नमक केलिए कीमत अदा करनेवाले नमकहलालों के प्रति सागर असंतुष्ट है। उनके ऐसे करतूत से सागर को दुख होता है। ऐसे नमकहलालों को कीमत अदा करना पड़ने पर भी वे इसके विरुद्ध क्रांन्तियाँ न होने देते तथा कीमत लेनेवाले दुश्मनों पर लोग रहम खा गए और अत्याचार सहते रह गए। लेकिन गाँधीजी को नमक की कीमत मालूम थी, अमरूद बेचनेवाली मुनिया भी यह जानती थी। इसलिए गाँधीजी ने दंडी में समुद्र जल से नमक बनाकर विरोध प्रकट किया।

अन्त में कवयित्री कहती हैं कि इस दुनिया में और कुछ रहे या न रहे, नमक तो अवश्य रहेगा। ईश्वर के आँसू तथा आदमी का पसीना, ये दोनों ऐसा नमक है जो इस दुनिया को स्थिर रखेगा। मतलब आँसू, पसीना दोनों नमकीन हैं और सब कुछ नष्ट हो जाए तो भी आँसू और पसीना दोनों बने रहेंगे। ईश्वर की कृपा तथा मनुष्य का परिश्रम दोनों इस दुनिया को बनाए रखने केलिए पर्याप्त हैं।

भरोसा

पवन करण

पवन करण एक भारतीय कवि, संपादक, सामाजिक और राजनीतिक विश्लेषक और 21 वीं सदी की शुरुआत के प्रमुख कवियों में से एक हैं। उन्हें भारतीय समाज में महिलाओं के जीवन के यथार्थवादी चित्रण के लिए अत्यधिक जाना जाता है। पवन करण की कविताओं में साम्राज्यवाद, पूंजीवाद, धर्म कट्टरता, जाति पर आधारित सामाजिक मान्यताओं और रूढ़िवादी रीति-रिवाज़ों का चित्रण मिलता है। पवन करण जी का जन्म 18 जून 1964 में ग्वालियर, मध्य प्रदेश में हुआ था। उनकी बहुचर्चित कविता-संग्रह हैं 'स्त्री मेरे भीतर', जिसे पुरस्कार भी मिला है। उनकी कविताएँ वर्तमान जन-जीवन का आँखों देखा विवरण है। आसपास हो रही समस्याओं को वे

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

अपनी कविताओं के द्वारा प्रस्तुत करते हैं। उनकी कविताएँ हमारे नित्य जीवन के संदर्भ से जुड़ी हैं।

'भरोसा' उनकी एक लघु कविता है, जो प्रकृति की वस्तुओं के सह अस्तित्व पर बल देती है। भरोसा यानी विश्वास अब भी दुनिया में मौजूद है। जिस तरह नमक की उपस्थिति सभी जगह है, वैसे ही भरोसा भी सभी जगह दिखाई देता है। कवि ने उसके लिए अनेक उदाहरण दिए हैं। पक्षी पेड़ों के भरोसे सब कुछ छोड़ जाते हैं। उनका खाना, घोंसला बनाने की शाखाएँ आदि आवश्यक सभी सुविधाएँ पेड़ों पर मिलती हैं। इसलिए वे सब कुछ छोड़कर पेड़ों का सहारा लेते हैं। पक्षी को पेड़ की तरह सुरक्षा और कहीं नहीं मिलती। शरत् ऋतु में पेड़ों से पत्ते झड जाते हैं और वे एकदम सूने हो जाते हैं, तब उन्हें भरोसा है कि वसंत ऋतु आएगा, नए पत्ते निकल आएंगे और नया जीवन मिल पाएगा। इसलिए वे अपने पके और सूखे पत्ते गिरा देते हैं। भरोसे पर ही दुनिया टिकी है।

आगे कवि कहना चाहते है कि पेड़-पौधों के बीज इसी विश्वास के साथ मिट्टी में समा जाते हैं कि बरसात आएगी तो वे उग आएंगे, और उनमें नए पेड़-पौधे बन जाएंगे। नावें पतवार के सहारे पानी के प्रवाह और भँवर को पार करती हैं। अर्थात् नाव निश्चित दिशा की ओर जाने के लिए पतवार का सहारा लेती है। पानी के बहाव और भँवर को पार करने के लिए पतवार सहायक होता है। मनुष्य के जीवन में भी यह आपसी विश्वास एवं सहारा आवश्यक है। स्त्री अपने परिवार को छोड़कर एक अनजान पुरुष के पीछे हमेशा के लिए इसी भरोसे के साथ चल देती हैं कि वहाँ उसे सुख और संरक्षण मिलेगा। मनुष्य के सामाजिक जीवन को बनाए रखने वाला घटक भरोसा ही है। पारिवारिक जीवन आपसी भरोसे पर ही टिका हुआ है। कोई भी वस्तु अपने आप में पूर्ण नहीं है, आसपास की किसी दूसरी वस्तु के सहारे ही हर एक वस्तु बनी रहती है। कवि का यह निरीक्षण बिलकुल ठीक है।

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

<u>औरत और घर</u>

<u>कात्यायनी</u>

कवयित्री कात्यायनी का जन्म 7 मई 1959 को गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ। 'चेहरों पर आँच', 'सात भाइयों के बीच चंपा', 'इस पौरुषपूर्ण समय में', 'जादू नहीं कविता', 'राख अँधेरे की बारिश में', 'फ़ुटपाथ पर कुर्सी ' उनके काव्य-संग्रह हैं। उनकी कविताओं के अनुवाद अंग्रेज़ी, रूसी और प्रमुख भारतीय भाषाओं में हुए हैं।

अपनी कविता 'औरत और घर' के द्वारा कवयित्री यह कहने की कोशिश की है कि औरत के लिए घर सुरक्षा और प्यार की जगह है। घर आराम और प्यार के साथ-साथ त्याग का भी स्थान है। घर और औरत के बीच के संबंध के बारे में पुराने कवियों और आचार्यों की प्यार भरी बातों के बारे में बताते हुए कविता शुरू होती है। पुराने समय से कविगण घर के बारे में प्यार भरी बातें कहते आ रहे हैं। घर में होने, घर लौट चलने, दर्द भरे दिल से घर से बाहर जाने तथा घर की उदासी भरी यादें आदि के बारे में वे गीत और कविताएँ लिखते रहे। कवयित्री कहती है कि एक घर में एक औरत रहती थी जो घर को बहुत सुरक्षित समझती थी तथा घर को भूतों का डेरा बनने से बचाती थी । घर में वह सुरक्षा का अनुभव बेहद नशीली शराब की तरह करती थी। उसके घर में गैस, मिक्सी, सिंक, वाशबेसिन, सैनिफ्रेश, ओडोनिल, मेहँदी, नहाने धोने के साबुन, सिंगारदान, झाड़, कुर्सियाँ-दीवान, कैलेंडर, पेंटिंग्स आदि सब चीज़ें थीं। स्वर्गीय पिता की माला सजी तस्वीर दीवार पर टंगी हुई थी। शादी के समय पति के साथ खिंची हुई उसकी अपनी तस्वीर भी दीवार पर टंगी थी। सोने के कमरे में बिस्तर था जिस के साथ बेडस्विच से जलने वाला नीला बल्ब था। शब्दकोश सहित घर में पढ़ने-लिखने की पुस्तकें थीं तथा बच्चे भी थे। कुल मिलाकर घर भरा-पूरा था। ऐसा घर औरत को अपनाकर अपना एक हिस्सा बना लिया। घर हमेशा औरत पर एक अनुशासनप्रिय अभिभावक की तरह नज़र रखता था।

जब औरत बाहर सड़क पर निकलती थी घर उसके संरक्षण के लिए पीछा करता था क्योंकि घर को अथवा घर के बड़े व्यक्तियों को पता था कि स्त्री का बाहर सड़क पर निकलना खतरनाक था। कभी-कभी घर जादूगर की तरह अपने स्वरूप को सिद्धांत में बदल देता था। जिंदा और निर्जीव चीज़ों के समुच्चय के बदले संस्कार और मूल्य बन जाता था। घर के अपने संस्कार और मूल्य का अनुसरण करने को औरत बाध्य होती थी। घर मसखरा भी था लेकिन कभी वह उचाट पठारी मैदान या रेत का टीला बनकर या चट्टानों की तरह लुढ़ककर औरत के सपने में आकर उसे डराता था। नौकरी करनेवाली औरत केलिए दफ्तर भी जच्चाघर और रसोईघरवाले घर की तरह ही होता है। औरत हमेशा अपने आप को घर का एक टुकड़ा समझती रही। एक दिन औरत ने अचानक एक मासूम सा सवाल किया कि क्या एक घर के बिना औरत हो सकती है ? उसके लिए और कोई चौहद्दी हो सकती है जहां रहकर आराम से जीवन बिताए और औरत औरत बनी रहे और घर घर बना रहे, मतलब औरत घर का टुकड़ा या हिस्सा न होकर वहां का निवासी रहे। अपना व्यक्तित्व खोकर केवल घर का हिस्सा बना रहने के खिलाफ औरत ने आवाज़ उठाई। घर के बन्धन से मुक्त होने की औरत की अदम्य इच्छा इससे प्रकट हुई। औरत के इस मासूम सवाल के फलस्वरूप

VTMNSS COLLEGE LIBRARY

उसका पासपोर्ट जब्त कर दिया गया तथा दुनिया के किसी भी देश की नागरिकता केलिए, किसी भी घर के लिए उसे अयोग्य घोषित कर दिया गया। इस तरह घर से अलग होकर औरत पागलखाना पहुँच गयी और उसे क्षमादान मिल गया। उसने यह बात समझ ली कि पागलखाना भी एक घर है जहाँ देखभाल, चौकसी तथा आदेश हैं, सुरक्षा के नाम पर नियंत्रण है। यह उनका घर है जिनका दुनिया में कोई दूसरा घर न हो।

घर के बन्धन से मुक्त होकर आज़ाद रहने की कोशिश करनेवाली औरतों के खिलाफ समाज आवाज़ उठाता है तथा उसके खिलाफ कानूनी कार्यवाहियाँ ली जाती हैं। आखिर वह पागलखाने पहुँच जाती है।

पिता

उदय प्रकाश

भारत के प्रख्यात कवि, कथाकार, पत्रकार और फ़िल्मकार उदय प्रकाश का जन्म गाँव सीतापुर ज़िला अनूपपुर, मध्य प्रदेश में 1 जनवरी, 1952 में हुआ था। इनकी रचनाएँ न केवल भारतीय भाषाओं, बल्कि कई विदेशी भाषाओं में अनुदित होकर लोकप्रिय हुई। कवि, संपादक और अध्यापक के रूप में हिंदी साहित्य जगत में अपनी छाप लगाए हुए उदय प्रकाश की एक कविता है 'पिता'। इसमें उन्होंने अपनी प्रभावी पिता की याद करते हुए कहा है कि पिता जिस मिट्टी में रहते और परिश्रम करते थे उसी में वे समा गए। पिता ब्रह्माण्ड के बहुमूल्य रत्न है जिनकी तुलना किसी से भी नहीं की जा सकती है।

कवि के मन में वर्षों बाद भी पिता की याद हरी भरी रहती है। उनके मन में पिता का स्वरूप उस समतल मैदान जैसा था, जहाँ कटीले पेड़ और झाड़ियों का समूह और पत्थरों से भरा था। वे उस बीहड जंगल के समान थे जिस में सागौन, शीशम, बबूल आदि पेड़ और तेंदुओं, हिरन आदि जंगली जानवर थे। कवि की याद में उनके पिता बड़े ही खुरदरे (rough) शरीर और स्वभाव के आदमी थे। पिता कठोर होने के साथ ही मुलायम दिलवाले भी थे। वे प्रभावी आदमी थे। गाँव में ही नहीं गाँव के नाके के पार शहर तक पिता का प्रभाव था। गांव के हर इमारत पर उनकी कन्नियाँ सरकी थीं, इमारतों की दीवारों पर उनकी उँगलियों के निशान थे। इमारतों की चौखटों पर उनका रन्दा (Smoothing Tool)चला था। वे मेहनती मज़दूर थे। सख्त स्वभाव के होने के साथ दूसरों की सहायता भी करते थे। मकानों के निर्माण में उनका हाथ था। नाके के इस पार गाँव के आबादी रहित खेत थे। खेत की ठोस (पक्की) मिट्टी पिता

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

कुदाल से खोदते थे और हल से जोतते थे। हल की मूठ पर उनकी छालेदार हथेलियों की छाप पड़ी थी। उनके बैलों के ठोस पुट्ठों पर उनके डंडे के दाग थे।

बचपन की याद करते हुए कवि कहते हैं कि वे बचपन में पिता के कंधे पर बैठकर बाज़ार घूमने जाते थे। बाज़ार की भीड़ में पिता पहाड़ की तरह चलते थे और उनके कंधे पर कवि जंगली तोते की तरह बैठे रहते थे। लेकिन बाद में एक दिन पिता अचानक गायब हो गए। लोग कहते हैं कि खेत, कुदाल, बैल, इमारतों, ईंटें, दरवाज़े और बाज़ार उन्हें हज़म (digest) कर गए। कवि को याद है कि पिता मज़दूर और किसान थे। मेहनती पिता उसी मिट्टी में समा गए। कवि को ऐसा लगता है कि उस मिट्टी से निकलते सोता मेहनती पिता की देह का पसीना है। पिता की याद में कवि की आँखों से टपकने वाले आँसू की बूँदें भी उसमें मिली हुई है। कवि का मानना है कि संसार में सिर्फ पिता ही है जो अपने संतान के लिए विश्व के असंभव कार्य को भी सरलता से कर सकते हैं।

बबूल के नीचे सोता बच्चा

केदारनाथ सिंह

समकालीन कविता के सशक्त कवि केदारनाथ सिंह का जन्म 7 जुलाई 1934 को उत्तर प्रदेश के बलिया ज़िले के चकिया गाँव में हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा गाँव में हुई, फिर उच्च शिक्षा के लिए बनारस में रहे। वह अज्ञेय के संपादन में प्रकाशित 'तीसरा सप्तक' (1859) के सात कवियों में से एक थे। उनका पहला कविता संग्रह 'अभी बिल्कुल अभी' 1960 में प्रकाशित हुआ। उन्हें 'अकाल में सारस' के लिए 1989 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें 2014 में प्रतिष्ठित ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

केदारनाथ सिंह की कविता में बिम्ब विधान द्वारा आशय प्रकाशन के उदाहरण अधिक मात्रा में पाए जाते हैं। 'बबूल के नीचे सोता बच्चा' उनकी ऐसी ही एक कविता है। इस कविता में उन्होंने वर्तमान भारत के निम्नवर्ग के जीवन और उस के प्रति शासक वर्ग के निरपेक्ष (तिरस्कृत) भाव की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। कवि एक गरीब और मासूम बच्चे का शोचनीय चित्र अपने शब्दों में व्यक्त करते हैं।

कवि कहते हैं कि बबूल के नीचे एक गरीब बच्चा सो रहा है। उसकी माँ निराई के काम में व्यस्त है। भूखे बच्चे के पास एक बासी रोटी पड़ी है। एक टिन का खाली डिब्बा और एक खाली टोकरी पड़ी है। खाली टोकरी, खाली डिब्बा और बासी रोटी बच्चे के खाली पेट की ओर इशारा करती है। बच्चे को माँ का प्यार नहीं मिलता। माँ

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

का वात्सल्य पाने और लोरियाँ सुनकर सोने का भाग्य उसे प्राप्त नहीं। उसे मिट्टी पर सुलाया गया है। बबूल का पेड़ उसे छाया देता है। मिट्टी ही बच्चे का झूला है और हवा में हिलते पेड़ की काँटेदार शाखाएँ उसे थपकियाँ देती हैं। यह भारत के गरीब देहाती बच्चे की हालत या स्थिति है।

कवि आगे कहते है कि दिल्ली जो राष्ट्र सा शासन केन्द्र है और हरिकोटा, जहाँ के सतीश धवान स्पेस सेन्टर से अंतरिक्ष यान का प्रक्षेपण होता है, उसे बबूल के नीचे सोते बच्चे के विषय में सुनाना चाहिए। देश में बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाई जा रही है, वैज्ञानिक शोध हो रहे है। अंतरिक्ष यान का प्रक्षेपण बराबर होता जा रहा है। अन्य ग्रहों की यात्रा की तैयारी हो रही है। राडार स्थापित करने के लिए करोड़ों रुपए खर्च किए जा रहे हैं। परंतु गरीबी मुक्त राष्ट्र के निर्माण के लिए बनाई जाने वाली योजनाएँ एकदम अधूरा है। इस कारण देश को स्वतंत्र हुए पचहत्तर वर्ष बीत जाने पर भी देहाती बच्चे भूखे रहने को मजबूर है। कवि ने यहाँ मनुष्य की प्राथमिक आवश्कताओं की पूर्ति की अपेक्षा बड़ी-बड़ी योजनाओं के लिए देश की संपत्ति बहा देने की नीति के विरुद्ध अपना आक्रोश प्रकट किया है। बबूल के नीचे सोने वाला गरीब बच्चा शायद बड़ी संभावनाओं का भंडार होगा। लेकिन संरक्षण और प्रोत्साहन के अभाव में उसका विकास रुक जाएगा।

कवि चेतावनी देते है कि अभी उल्टी गिनती शुरू करने में जल्दी मत करो। उड़ान शुरू करने में अभी देर होगी। माँ की निराई का काम अभी भी जारी है। उसके पसीने की गरमी से दूध गरम हो रहा है। उसकी मजदूरी मिलने में छह घंटे की देरी होगी। इसलिए अच्छा है कि बच्चा सोता ही रहे। यह देश के करोड़ों बदकिस्मत बच्चों की हालत है।

भाषा की मिठास

डॉ.ए.अरविंदाक्षन

केरल के हिन्दी लेखकों में प्रमुख है डॉ.ए.अरविंदाक्षन । केरल के पालक्काड जिल्ले में 10 जून 1949 को उनका जन्म हुआ। कविता, आलोचना, निबंध, अनुवाद, संपादन आदि साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में आप अपना योगदान देते आ रहे हैं। भाषा की मिठास कविता के द्वारा आप मातृभाषा के महत्व का वर्णन करते हैं।

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

कवि का कहना है कि हर शब्द अपने आसपास की हरियाली तथा मिट्टी की गन्ध से पलता है। इसलिए अपनी मातृभाषा का इस्तेमाल वे जब कभी करते हैं तब उनके आँगन के वृक्ष से एक चिड़िया गाना शुरू करती है तथा पूरे आकाश में आसपास के बच्चों की आवाज़ बुलंद होती है। कवि कहते हैं कि उनकी भाषा से चिड़िया, बच्चे तथा सारे फूल और पत्तियाँ खुशी से सिहर उठते हैं। मतलब मातृभाषा मनुष्य को ही नहीं पूरी प्रकृति को खुशी प्रदान करती है।

कवि कहते हैं कि मौसम की इस खुशी से वे पूरी तरह खुश नहीं हैं। इसका यही कारण है कि हमारे इलाके के कुछ हिस्सों के बड़े बड़े पेड़ों में कुछ चील नीड़ बनाए हुए हैं जिनके आडंबर से पूरा प्रदेश घिनौना नज़र आता है। कवि ने आराम से उन्हें सुना तो उन्हें लगता है कि वे हमारी मिट्टी की गन्ध, हमारी हरियाली तथा हमारे बच्चों के सपनों को शब्द नहीं दे सकते। ये चील जो हैं अपने पंख पसारकर, अपनी भाषा के रौब दिखाते हुए पूरे इलाके के ऊपर उड़ने लगते हैं तो हमारे कवियों, ऊँचे पद चाहनेवालों तथा सभी लाटसाहबों को यही लगता है कि चीलों की भाषा में प्रभाव है। वे सब अपनी भाषा को भूलकर चील की भाषा को अपनाते हैं। मतलब यह है कि विदेशी लोग हमारे देश में आकर बस गये तथा वे अपना रौब दिखाने लगे तो यहाँ के कवि, ऊँचे पद चाहनेवाले तथा सभी लाटसाहब अंग्रेज़ी भाषा को अपनाने की कोशिश करने लगे। अपनी मातृभाषा को उन्होंने एकदम छोड़ दिया।

कवि अपनी चिड़ियों से यही कहते हैं कि चीलों के डर से, मतलब विदेशी भाषा प्रभाव में पड़कर अपनी भाषा को छोड़ना नहीं चाहिए। यहाँ की हर घास की पत्ती में अपनी भाषा की मिठास है। चीलों को यहाँ से जाना ही है और चिड़ियों को यहीं रहना है और अपने बच्चों को पालना है। हमारा आकाश विशाल है। इस विशाल आकाश में पंख पसारकर गाते रहने का आह्वान कवि देते हैं तथा वे यही इच्छा करते हैं कि हमारी भाषा की मिठास में सब भीग जाए।

इस कविता के द्वारा कवि अपनी मातृभाषा तथा विदेशी भाषा में अन्तर पर विचार करते हैं। अपनी भाषा के महत्व को समझे बिना विदेशी भाषा के प्रभाव में पड़कर उसे अपनानेवालों से कवि यही कहते हैं कि मातृभाषा में मिठास होती है, मिट्टी की गन्ध होती है तथा वह सब कहीं खुशी फैलाती है। विदेशी भाषा में, जिसे कवि ने चील के रूप में प्रस्तुत किया है, ये गुण नहीं है।

VTM NSS COLLEGE LIBRARY